आनंदधाम की सैर

आर्थर

आनंदधाम की सैर

आर्थर
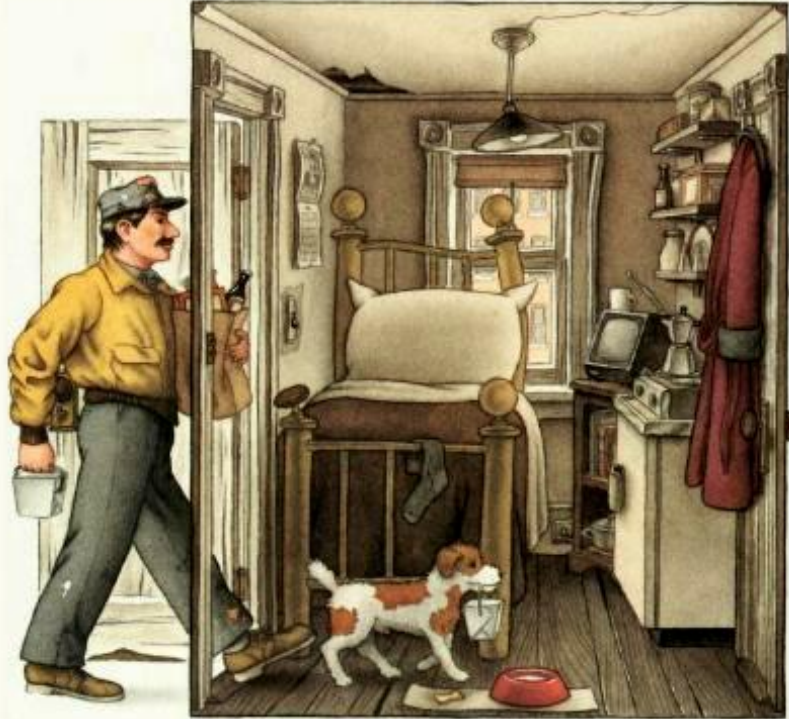
ऐल शांत स्वभाव का, एक सज्जन पुरुष था. वह एक दरबान था. अपने वफादार कुत्ते, ऐड्डी, के साथ वह वेस्ट साइड में एक कमरे में रहता था. दोनों एक साथ खाते थे, एक साथ काम करते थे, एक साथ टीवी देखते थे. जीवन में क्या गलत हो सकता था?
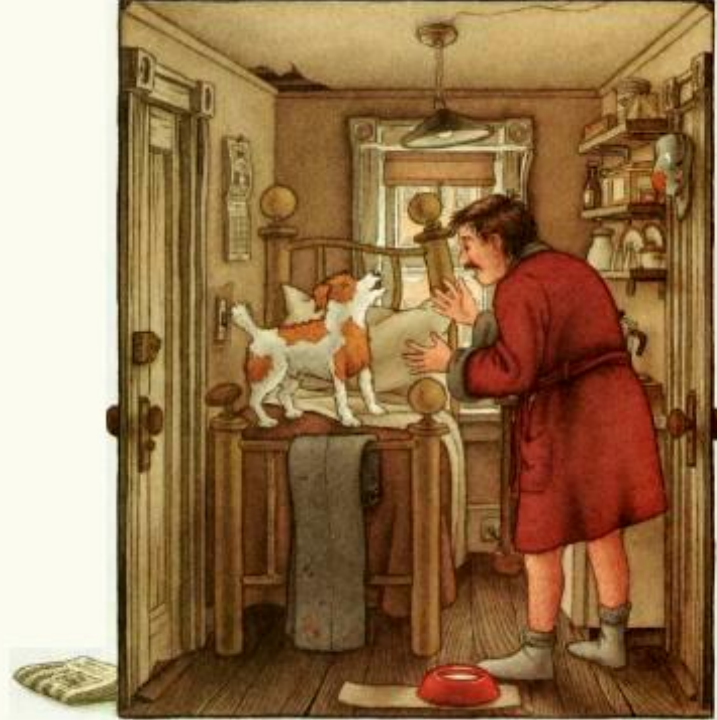
बहुत कुछ.

“इस घूरे को देखो!’ ऐड्डी ने गुर्रा कर कहा. “क्या हमारा अपना एक घर नहीं हो सकता? एक छोटा-सा सहन हो जहां दिल बहलाने के लिये मैं थोड़ी दौड़-भाग कर सकूँ?”

“ओह, अवश्य,” ऐल ने गुस्से से कहा. “आज तुम्हें घर चाहिए. कल न जाने क्या मांग बैठो? शायद चाँद!”

“चाँद? चाँद?” ऐड्डी भौंका. “कबूतर भी हम से बेहतर ढंग से रहते हैं.”

तो ऐल और ऐड्डी का जीवन दिक्कतों से भरा हुआ था. वह काम करते रहते थे, संघर्ष करते रहते थे. लेकिन किसी-न-किसी दिक्कत का सामना उन्हें करना ही पड़ता था.

एक सुबह जब ऐल अपनी दाढ़ी बना रहा था उसने एक आवाज़ सुनी. “अरे, ऐल,” किसी ने कहा. ऐल घूमा. उसे एक पक्षी दिखाई दिया, एक विशाल पक्षी.

“ऐल,” पक्षी ने कहा. “क्या तुम्हें बहुत मेहनत करनी पड़ती है? संघर्ष करते हो पर कोई सफलता नहीं मिलती? हम्म्म्म? मेरी बात सुनो. मैं एक ऐसी जगह जानता हूँ जहां तुम्हें किसी प्रकार की कोई चिंता या परेशानी नहीं होगी - शानदार जगह है.”

“हुह?” ऐल बोला. वह थोड़ा चकरा गया था.

“ऐल, ऐल, ऐल! जीवन में परिवर्तन भी होना चाहिये. कल मेरे साथ चलना. ऐड्डी को भी साथ ले लेना. वह जगह देख कर तुम मंत्रमुग्ध हो जाओगे!”

फिर उस पक्षी ने अपने पंख फड़फड़ाए और चला गया.

आप अनुमान लगा सकते हैं कि उस रात ऐल और ऐड्डी के बीच क्या चर्चा हुई होगी. ऐड्डी तो पहले ही अपना सामान बाँध रहा था.

“क्या? मैं अपना काम छोड़ दूँ?” ऐल बोला.

“झाड़ू और बाल्टी के अतिरिक्त भी जीवन में बहुत कुछ है!” ऐड्डी

“लेकिन.....”

“बस, अब और चर्चा नहीं, हम जा रहे हैं. मैं एक शब्द भी नहीं सुनना चाहता.’

भोर के समय दोनों बाथरूम में थे, विशाल पक्षी की प्रतीक्षा करते हुए.
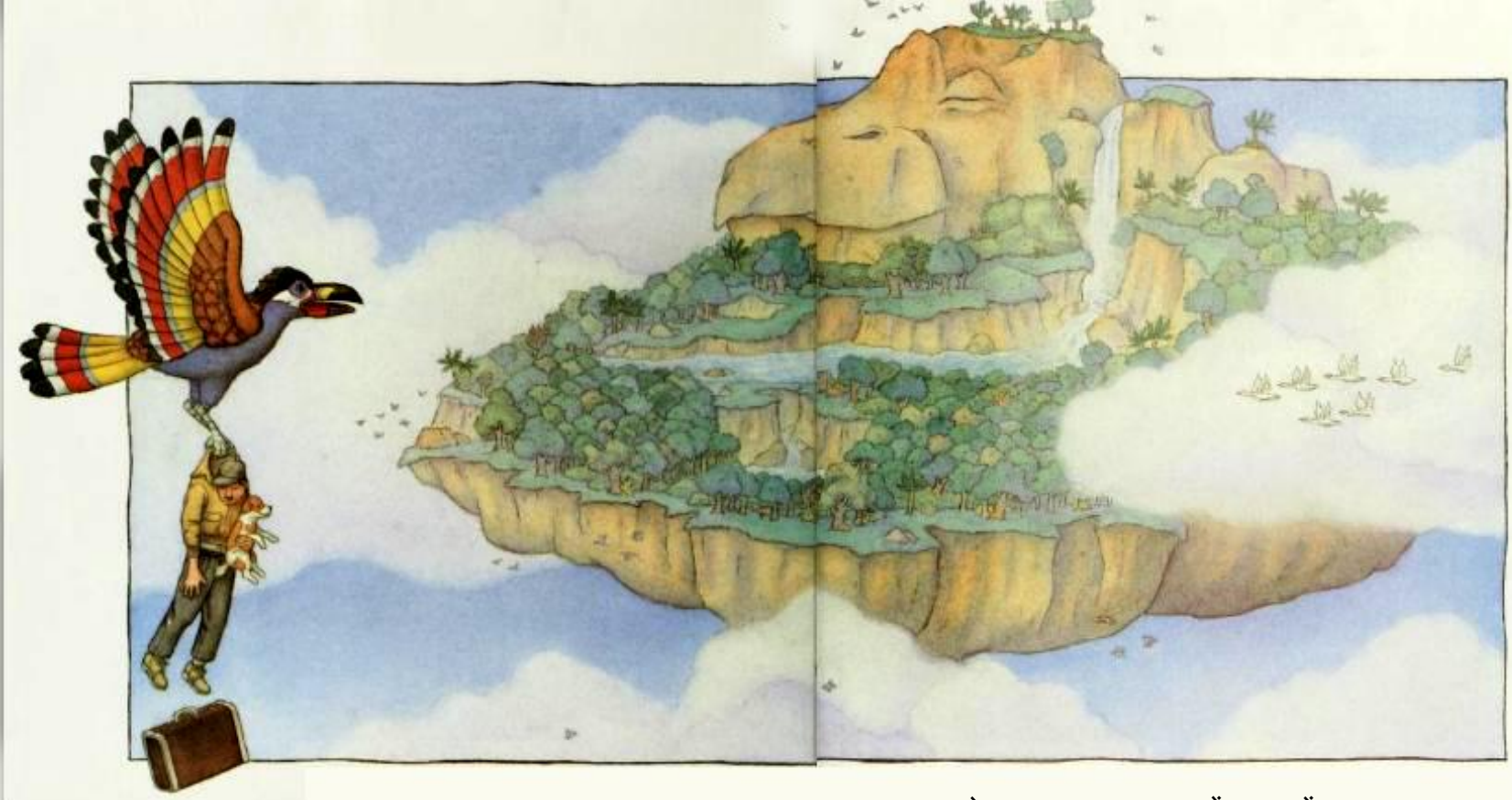
विशाल पक्षी आया और ऐल और ऐड्डी

को उठा कर आकाश में, हज़ारों फुट ऊपर,
एक द्वीप पर ले आया.

आश्चर्यजनक! हरे-भरे पेड़, उठती-गिरती पहाड़ियाँ, शानदार फूल और पौधे. यहाँ-वहाँ उड़ते पक्षी. सुंदर झरने और झिलमिल करते तालाब.

“ज़रा यह अद्भुत दृश्य तो देखो!” ऐड्डी बोला.

“वाह!” ऐल बोला.
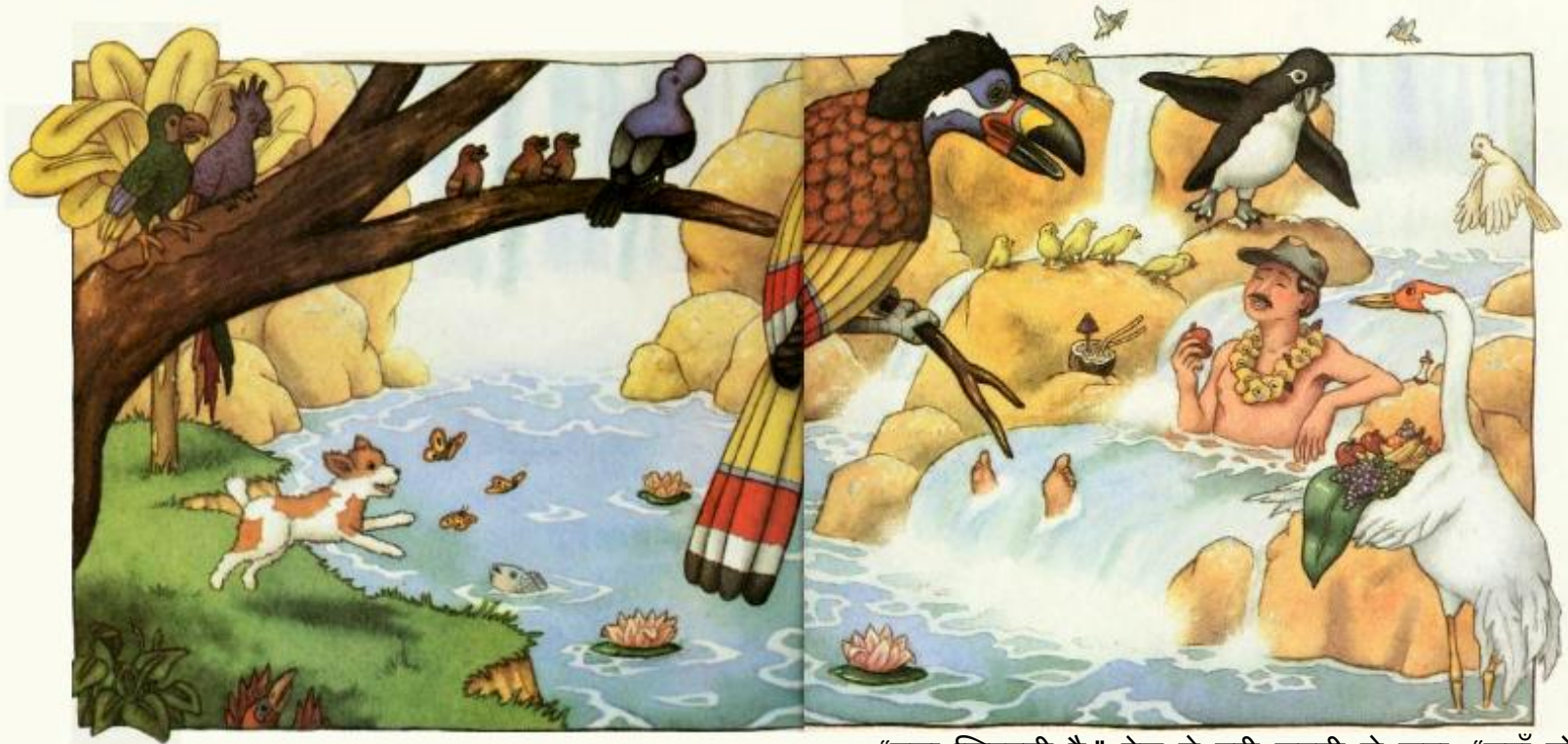
चहचाहते पक्षी उनके लिये खाना लाये. उन्होंने खूब खाया-पिया. वह तालाब में खूब तैरे. उन्होंने खूब धूप सेंकी. जीवन में इतना आनंद उन्हें कभी न मिला था.

"तो, ऐल, क्या यह सब बहुत बुरा है?" विशाल पक्षी ने पूछा.

"क्या ज़िन्दगी है," ऐल ने बड़ी मस्ती से कहा. "यहाँ तो कोई सारा अपना जीवन बिता सकता है."

दिन मज़े में बीतने लगे. बीते वर्षों की कष्टदायक यादें जैसे-जैसे धुंधली पड़ने लगी, ऐल और ऐड्डी को लगने लगा कि यही सच्चा आनंद था.

लेकिन पका हुआ फल जल्दी सड़ भी जाता है.

एक सुबह ऐल नींद से जगा और चिल्लाया,
"ऐड्डी! देखो हमें क्या हो रहा है! हम पक्षी बनते जा रहे हैं!"

सचमुच. उनकी आँखें छोटी और गोल हो गईं थीं. उनके नाक पक्षियों की चोंच जैसे हो गई थे.

"हमें यहाँ से निकल भागना होगा," उसने फटी हुई आवाज़ में कहा. उनके छोटे-छोटे पंख निकल आये थे. दुम के पर भी उगने शुरू हो गये थे.

"वापस चलो, वापस चलो!" ऐड्डी बतख की तरह बोला. "मैं पक्षी नहीं बनना चाहता."

"इससे तो अच्छा है कि मैं झाड़ू लगाने का काम कर लूँ!" ऐल एक पक्षी समान चीखा. दोनों ने तेज़ी से अपने पंख फड़फड़ाये और उड़ने लगे.
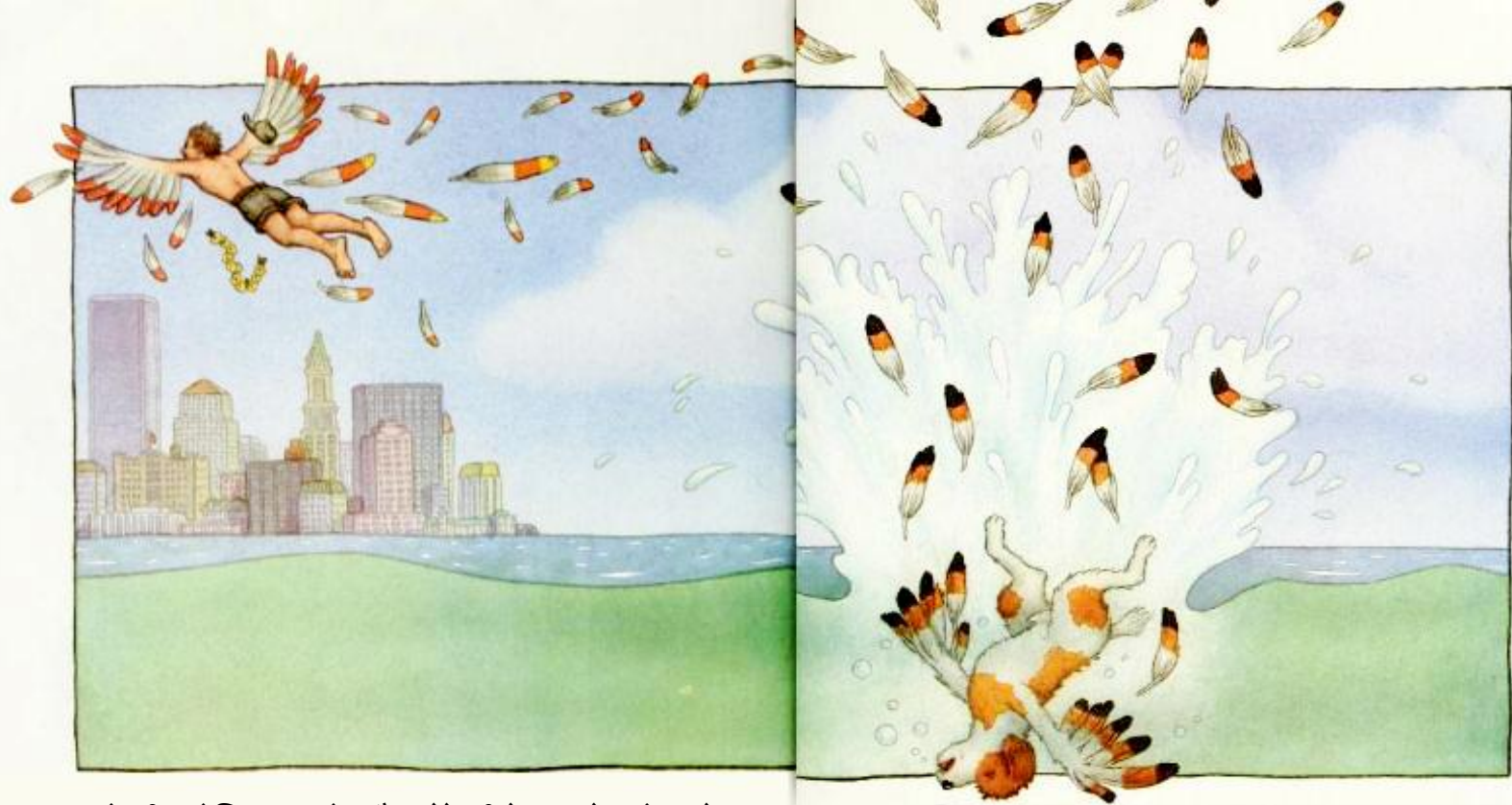
“ऐड्डी, होशियार रहो और मेरे पीछे आओ,” ऐल ने कर्कश आवाज़ में कहा. लेकिन आवेश में आकर ऐड्डी, गोल-गोल घूमता, ऊपर की ओर उड़ता जा रहा था.

उड़ने के प्रयास में वह बुरी तरह थक गया.
थक कर वह खुले सागर में जा गिरा और डूब गया.

ऐल भी बड़ी मुश्किल से सही-सलामत घर पहुंचा. अपने मित्र के बिना वह बहुत दुःखी था.
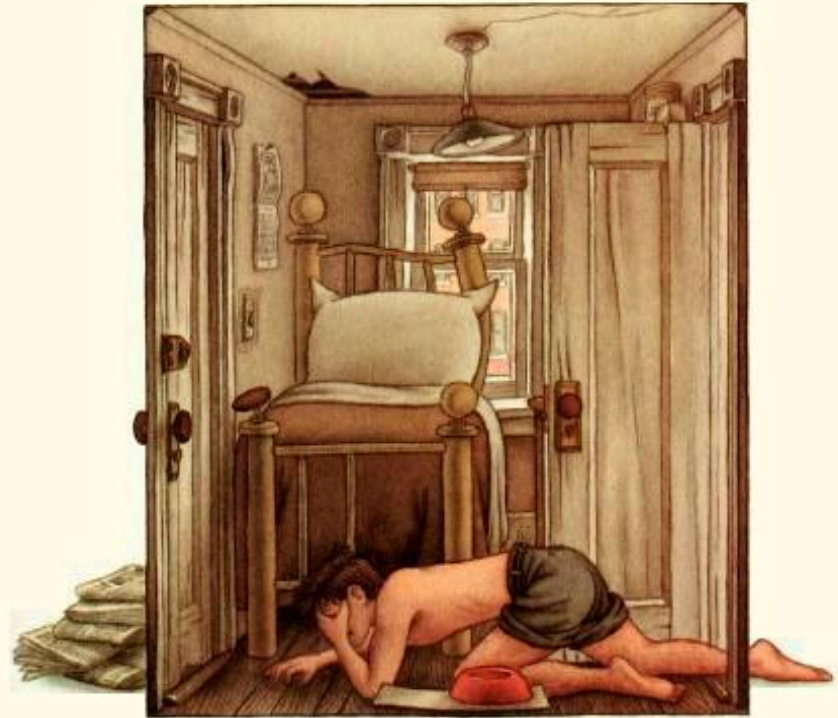
लेकिन, सौभाग्यवश, ऐड्डी एक अच्छा तैराक था. वह जल्दी ही तैर कर वेस्ट साइड पहुँच गया.

“ऐड्डी!” ऐल ख़ुशी से चिल्लाया.

“ओह, ऐल......"
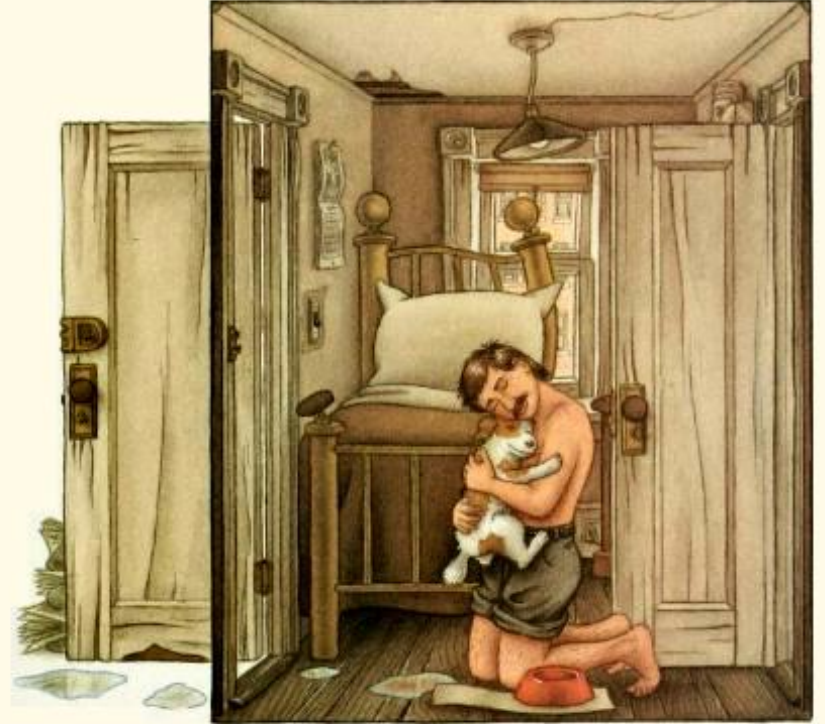
कभी-कभी आनंद-धाम खोकर भी स्वर्ग मिल जाता है.

समाप्त